

क. सत्य के लिए लड़ाई:

❖ सत्य बनाम झूठ।

- यीशु सत्य है और इसलिए सभी सत्य का पिता है (यूहन्ना 14:6)। हर चीज़ सच्ची, हर चीज़ भरोसेमंद, हर चीज़ जो सत्य है, वह उसी से आती है। और उसका सत्य हममें जीवन उत्पन्न करता है।
- इसके विपरीत, शैतान झूठ का पिता है (यूहन्ना 8:44)। सारा धोखा, सारी दुर्भावनापूर्ण सूक्ष्मता, सारा मिलावटी सत्य, उसी से आता है। और उसका झूठ हममें मृत्यु उत्पन्न करता है।
- दुश्मन के साथ अपने मुकाबले में, यीशु ने बाइबल को सभी सत्य के स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया: "लिखा है" (मत्ती 4:4; 21:13)।
- इसलिए, शैतान ने बाइबल को छिपाकर या विकृत करके नष्ट करने का काम किया है। और उसने इसे (हालांकि पूरी तरह से नहीं) रोमन कैथोलिक कलीसिया के माध्यम से, मध्य युग (जिसे "अंधकार युग" भी कहा जाता है) के दौरान हासिल किया।

❖ कलीसिया का समझौता।

- पौलुस ने भविष्य में सामने आने वाली बाहरी और आंतरिक समस्याओं के बारे में अपनी चिंता व्यक्त की (प्रेरितों के काम 20:29-30)।
 - (1) शिकारी भेड़िये। वर्ष 64 से 311 (सहनशीलता का सर्दिका आदेश) तक, कलीसिया को रोमन साम्राज्य से भयंकर उत्पीड़न का सामना करना पड़ा।
 - (2) भ्रष्ट लोग। चौथी शताब्दी की शुरुआत में, अपरिवर्तित लोगों को कलीसिया में शामिल किया गया जिन्होंने अपनी बुतपरस्ती को सच्चाई के साथ मिलाया।
- शैतान ने सत्य को भ्रष्ट करने और कलीसिया में मूर्तिपूजा और रविवार का पालन शुरू करने के लिए अपनी "आंतरिक" रणनीति का इस्तेमाल किया।
- जैसा कि पौलुस ने भविष्यवाणी की थी, इन त्रुटियों को स्वीकार कर लिया गया था, और उन लोगों के बीच अंत तक बनी रहेंगी जो सत्य नहीं जानना चाहते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 2:7-12)। अंतिम लड़ाई सब्त के साथ समझौते पर आधारित होगी।

ख. परमेश्वर के वचन के लिए लड़ाई:

❖ बाइबल में सुरक्षा।

- बाइबल परमेश्वर की इच्छा का अचूक प्रकटन है। मानवता के उद्धार के लिए स्वर्गीय योजना प्रस्तुत करता है।
- इसलिए, हमारी सुरक्षा केवल बाइबल और उसकी प्रत्येक पुस्तक, अध्याय और पद्य में पाई जाती है (2 तीमुथियुस3:16)।
- इसमें हम शैतान की रणनीति पाते हैं; सृष्टि; यीशु का जन्म, जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान और मध्यस्थता; पापों की क्षमा; दूसरा आगमन; नई पृथ्वी पर अनन्त जीवन...
- यदि हम इसके किसी भाग को अस्वीकार करते हैं (उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 1 और 2 का सृष्टि विवरण), तो हम इसके द्वारा सिखाए गए किसी भी सिद्धांत को अस्वीकार कर सकते हैं। और फिर...बाइबल के बाकी हिस्सों पर भरोसा करने से हमें क्या सुरक्षा मिल सकती है?

❖ मानवीय तर्क।

- "परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है।" (1 कुरिन्थियों 2:14)।
- मानवीय तर्क का एक उदाहरण उच्च आलोचना है, जिसने 18वीं शताब्दी से बाइबल की "शैक्षिक" व्याख्या का प्रस्ताव रखा है। इस दृष्टिकोण के तहत, हम परमेश्वर के वचन से क्या लाभ प्राप्त कर सकते हैं यदि हम उसकी शक्ति या उस भविष्य को जानने की क्षमता से इनकार करते हैं जो हमारा इंतजार कर रहा है?
- निस्संदेह, शत्रु ऐसे रास्ते बनाता है जो सही लगते हैं, लेकिन उनका अंत मृत्यु है (नीतिवचन 16:25)।

ग. दिमाग के लिए लड़ाई।

- ❖ जो लोग खो गए हैं उनमें ज्ञान की कमी इसलिए नहीं है क्योंकि उनमें जानने की क्षमता नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे जानना नहीं चाहते। शैतान ने उनके दिमागों पर बहुत सी चीज़ों से कब्ज़ा कर लिया है जो उन्हें यह सोचने से रोकती हैं कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है: उनका उद्धार।
- ❖ लेकिन किसी को भी इस अवस्था में रहने की जरूरत नहीं है। जब मन आध्यात्मिक अंधकार में होता है, तो एक ज्योति होती है जो उसमें चमक सकती है और चमकेगी: "ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया।" (यूहन्ना 1:5)।
- ❖ हममें से जो लोग इस ज्योति को स्वीकार करते हैं वे शत्रु के कार्य को नष्ट कर सकते हैं, और अंधकार में से यीशु की ज्योति को चमका सकते हैं।